हंसता हुआ धर्म

एक आदमी की पत्नी मर गई। वह छाती पीट कर रो रहा है और चिल्ला रहा है कि उस पर बड़ा दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। सभी उसके मित्र उसे समझा रहे हैं कि मत घबड़ाओ। लेकिन वह और रोए जा रहा है। सभी मित्र सोच रहे हैं कि बहुत सदमा उसे पहुंचा है। फिर उसकी पत्नी की अरथी उठाई गई, ताबूत में उसकी लाश रखी गई और अरथी उठाई गई। जैसे ही अरथी बाहर निकली तो बीच आंगन में एक नीम का दरख्त था, वह अरथी उससे टकरा गई। और अचानक भीतर से आवाज आई, ऐसा लगा कि वह स्त्री अभी मरी नहीं, जिंदा है। ताबूत खोला गया। वह स्त्री जिंदा थी। घर भर में खुशी छा गई, लेकिन पति एकदम और भी ज्यादा उदास हो गया।

फिर तीन साल बाद वह स्त्री दुबारा मरी। वह पति फिर चिल्लाने लगा, रोने लगा। फिर उसकी अरथी बांधी गई, वह रोता जा रहा था। और जब लोगों ने अरथी उठाई तो उसने कहा, जरा सम्हल कर उठाना, फिर नीम से मत टकरा देना, क्योंकि तुम्हारी भूल के लिए पिछले तीन साल मुझे परेशान होना पड़ा।

एक ट्रेन में तीन स्त्रियां एक बैंच पर बैठकर बातें कर रही थीं। एक स्त्री जो करीब साठ साल की होगी, वह अपनी उम्र चालीस साल बता रही थी। उसकी हिम्मत देखकर दूसरी, जो करीब चालीस साल की होगी, उसने अपनी उम्र तीस साल बताई। तीसरी ने जिसकी उम्र तीस ही साल थी, उन दोनों की हिम्मत देखकर अपनी उम्र सोलह बताई। मुल्ला नसरुद्दीन ऊपर बैठा सुन रहा था। आखिर उसकी सीमा के, बरदाश्त के बाहर हो गया। वह एकदम छलांग लगाकर नीचे कूद पड़ा। उन स्त्रियों ने कहा, 'अरे! तुम कहां से आ पड़े?' उसने कहा, 'मैं अभी पैदा हुआ हूं।'

एक दुकान में ऐसा हुआ। एक स्त्री ने बहुत सामान खरीदा। छोटा बच्चा उसके साथ था। दुकानदार बड़ा प्रसन्न था; उसने छोटे बच्चे को कहा, 'पप्पू ये चिलगोजे रखे हैं, मुट्ठीभर कर ले लो।' वह लड़का खड़ा रहा, उसने चिलगोजे लिए नहीं। उस दुकानदार ने कहा, 'अरे, तुम्हारी मां कुछ भी न कहेगी। तुम ले लो। और जब मैं कह रहा हूं, तो तुम क्यों रुके हो?' फिर भी वह रुका रहा। दुकानदार ने कहा, 'ऐसा बच्चा मैंने नहीं देखा! बच्चे तो बिना कहे मुट्ठियां भर लेते हैं!' तो उसने खुद मुट्ठी भरकर चिलगोजे बच्चे के खीसे में भर दिये। बाहर आकर बच्चे की मां ने पूछा, 'पप्पू, चिलगोजे तुझे बहुत प्रिय हैं। हद कर दी तूने संयम की। तू कैसे संयम साधे रहा!' उसने कहा, 'उसकी मुट्ठी बड़ी थी। वह कह रहा था, मुट्ठी भर लो। मेरी मुट्ठी में कम आते।'

मैंने सुना है एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी गुस्से से भरी हुई घर आई और उसने मुल्ला से कहा कि भिखारी भी बड़े धोखेबाज होते हैं।

'क्यों क्या हो गया?' नसरुद्दीन ने पूछा।

'अजी एक भिखारी की गर्दन में तख्ती लगी थी, जिस पर लिखा था : जन्म से अंधा। मैंने दया करके पर्स में से दस पैसे निकाल कर उसके दान-पात्र में डाल लिए। तो जानते हो कहने लगा, हे सुंदरी, भगवान तुम्हें खुश रखे। अब तुम्हीं बताओ कि उसे कैसे मालूम हुआ कि मैं सुंदरी हूं?'

मुल्ला खिलखिलाकर हंसने लगा और कहने लगा, तब तो वह वास्तव में अंधा है और जन्म से अंधा है। मैं ही एक अंधा नहीं हूं, एक और अंधा भी है।

एक बहुत गंदे बच्चे ने अपने पिता से पूछा— पिताजी, हम सब जासूस-चोर खेल रहे हैं और मैं जासूस हूं, जरा बताइए कि मैं क्या करूं कि मेरे दोस्त मुझे पहचान न पाएं?

पिताजी बोले—बेटा, तुम सिर्फ साबुन से मुंह धो लो, तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा।

एक गांव में रामलीला हुई। लक्ष्मण जी बेहोश पड़े हैं, हनुमान जी गए हैं संजीवनी बूटी लेने। मिली नहीं तो पूरा पहाड़ लेकर आए। रामलीला का पहाड़! एक रस्सी पर सारा खेल बनाया गया था। क्योंकि उड़ते हुए आना है। तो रस्सी पर एक नकली पहाड़ लिए हनुमान जी आए। गांव की रामलीला! जिस चरखी पर रस्सी घूम रही थी, रस्सी और चरखी कहीं उलझ गई। गांठ न खुले। जनता अलग बेचैन। लक्ष्मण जी भी बीच-बीच में आंख खोल कर देख लें कि बड़ी देर हुई जा रही है। रामचंद्र जी भी ऊपर की तरफ आंख उठा कर देखें और कहें कि हे हनुमान जी, कहां हो? जल्दी आओ। लक्ष्मण जी प्राण संकट में पड़े हैं। हनुमान जी सब सुन रहे हैं, मगर बोलें तो क्या बोलें, क्योंकि वे अटके हैं। किसी को कुछ न सूझा; मैनेजर घबड़ाहट में आ गया, उसने रस्सी काट दी। रस्सी काट दी तो हनुमान जी धड़ाम से पहाड़ सहित नीचे गिरे। गिरे तो भूल ही गए।

रामचंद्र जी ने पूछा कि जड़ी-बूटी ले आए? लक्ष्मण जी मर रहे हैं।

हनुमान जी ने कहा ऐसी की तैसी लक्ष्मण जी की! और भाड़ में गई जड़ी-बूटी। पहले यह बताओ रस्सी किसने काटी?

— (ओशो पुस्तकों से संकलित)